International Journal of Applied Research 2017; 3(6): 1210-1212

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(6): 1195-1197
www.allresearchjournal.com
Received: 27-04-2017
Accepted: 31-05-2017

भागवत मंडल
शोधार्थी, विश्वविद्यालय, मैथिली, विभाग, ल.ना.मि.वि., बिहार, दरभंगा, भारत

Corresponding Author:
भागवत मंडल
शोधार्थी, विश्वविद्यालय, मैथिली, विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, बिहार, भारत

एकैसम शताब्दीक उपन्यासक स्वरूप विवेचन

भागवत मंडल

सारांशः
जावत धरि साहित्य समाजक वस्तु नहि बनत, ताबत धरि ओकरा प्रति समाजक लोक मे समर्पणक भाव नहि उत्पन्न हेतैक। इतिहास गवाह अछि जे कतेको चर्चित साहित्य समाजक स्वरूप बदलि देलकैक। आइ एकैसम शताब्दी मे साहित्य संग समाज सेहो स्वतंत्र बनि विचरण करय चाहैत अछि। परस्पर एक–दोसर समानताक रथ पर सवार नव जागृति आनय चाहैत अछि। रचनाकार लोकनि परिधि सँ बाहर भऽ ग्रसित मानसिकता वला लोकक नब्ज टटोलि रहल छथि। एहि कड़ीमे 'मौलाइल गाछक फुल' उपन्यासक रचयिता श्री जगदीश प्रसाद मंडल छथि। ई पहिल वेर श्रुति प्रकाशन, न्यू राजेन्द्रनगर, नई दिल्ली सँ 2009 ई० मे प्रकाशित भेल। ई एकैसम शतीक पहिल दशकक उपन्यास अछि। श्री मंडल जी तरकारीक खेती करैत लगातार मैथिली साहित्यक रचना मे लागल छथि।

प्रस्तावनाः
श्री जगदीश प्रसाद मंडलक' जन्म 5 जुलाई 1947 ई० मे मधुबनी जिलाक बेरमा नामक गाम मे भेल छलनि। हिनका 'टैगोर साहित्य पुरस्कार'क संग कतेको पुरस्कार भेटल छनि। एहि उपन्यासमे मंडल जी सुदूर देहातक गाम घर मे वर्णित विषय–वस्तुक विलक्षण चित्रण कयने छथि।
पहिले जमाना मे भयंकर अकाल परैत छलै। एह साल अखाढ़ बितल, रौदी भेला दू मास बित रहल छई। धरती पानिक बिना आ लोक अन्न–पानि बिना तरैप रहल छई। जीव–जन्तु पानिक बिना झुलैस रहल छई। लोक सब थारी–लोटा बंधक लगा मोरङ भाट, बंगाला, दिनापुर आ ढाका जाय लागल छई।
अनुपक अङनामे तीन दिन सँ चुल्ही नजि पजरलै। नल–दमयन्ती जकाँ अनुपकें भारी विपति परल रहै। पाञ्च टा सन्तान मे एकेटा बौऐलाल बाँचल छलै, जे आइ भूखे मरि रहल छैक। अनुप दुनू परानीक आँखि सँ नोर बहि रहल छलै। बच्चाक जान अब्ब–तब्ब मे रहै। ओकर ममियौत बहिन बौऐलाल कें देखि क कहलकें भैया बौआक प्राण छेबे कऽर' नारी चलिते छई। बौऐ लाल बाजल दीदी भुखे बगहा लगैत अछि। रधिया लोटा बेच गहुम कीनि अनलक आ जाँत मे पीसि रोटी बना ओकरा खुआ देलकै। तीनिये टा रोटी भेलै सब मिलक' खेलक। बौऐलाल खेलाक बाद पानि पीब हाफी कयलक।
दोसर दिन भोरे जन सभ कोदारि टल्ला ल' काज करैक लेल जुमि गेलै। गौआ सँ बेसी अनगौये जन रहै। गौआ जनक संगे अनगौआ जनकें हो–हल्ला भ' गेलै। गामक सिंहसरा आ सुखेतक भुटकुमरा कें माटिक खातिर गारि–गलौज होअए लगले।
आन गामक जन सब कोदारि–छिट्टा आ कान्हपर टल्ला ल' क' बिदा भ' गेलै। गामक जन सभ माटि काऽट' लगलै। अनुप, रधिया आ बौऐलाल तीनू गोटे माटि काट' लगलै। ओकर काज देखि–भैया मालिक दुनू बापूतकें बजौलकै।
साँझुपहर रमाकान्त मुसनाक संगे जनक' हिसाँब करैत छल। रमाकान्त कें ईमानदारीक पाठ अपन पिता सँ भेटल रहनि। पिताजी हुनकर न्याय शास्त्रक विद्वान छलाह। बापक सोलहो आना प्रभाव रमाकान्त पर परल रहनि। बौऐलाल कें दोबर बोनिक संग दू बीघा खेतो देलकै। मास्टर ओकरा पढ़बैयो लगलै। रमाकान्तक पिता कहथिन्ह– 'जखन केओ किछु माङ आबय तँ' ओकरा खाली वापस नहि करबै। मिथिला राजा जनकक भूमि छियै। मिथिला वासीकें हुनकें आदर्श पर चलक' चाही।
रमाकान्तक पिता अध्यात्म, वैयाकरण विद्वान सेहो छलाह। बच्चे सँ शिक्षाक प्रति लगाउ रहनि। पिता हुनका पढे लेल वनारस पठौने रहथिन। अध्ययन–अध्यापन आ समाजक सेवा करैत ओ सत्तरि वरख तक जीवित रहलाह।
रमाकान्तक मदद सँ शशी अमावस्या सँ पूर्णिमा मे बदलि गेल। हिरानन्द शशीकें कहलनि चिन्ता छोरु, जीवनक राह पर आगू बढ़। धरती कर्म भूमि थिकैक।

रमाकान्तक दुनू बेटा डाक्टर बनि मद्रास मे नौकरी करैत छनि। ओ सब शादी–वियाह कए ओतहि परिवार बसौने छनि। ओ बेटा लग मद्रास जाय चाहैत छथि। से पोखरिक काज सम्पन्न केलाक बादे जेताह।

बेरुपहर हिरानन्द आ शशीशेखर दुनू गोटे टहलै ल' बिदा भेल। तखने हिरानन्द अपन खेरहा कह' लगलै। मैट्रिक पास क' मास्टरीक इन्टरभ्यू देबए गेल रही। सबकें अरिबि–पैरबी करैत देखि छगुन्तामे परि गेलहुँ। मोन भेल जे सबसँ बड़का हाकिम कें जा क' कहबै आ नञि मानत तँ चारि घूसा–थप्पर लगा देबै, आ जहले मे रहब। महात्मा गाँधी अंगरेजक विरोध नहि केने रहितै तँ कि आई देश आजाद भेल रहितै। जीवन मे शान्तिक लेल क्रान्ति कऽर परैत छइ।

कि तखने हाई–स्कूलक देवेन्द्र बाबूक विचार मोन परलनि। 'मनुक्ख कें कखनो जीवन मे निराश नञि होबक चाही। निराशा सँ मृत्युक जन्म होइत छैक। ओ मोन मे ठानि लेलक जे हम मास्टर बनब। जीवन मे सफलताक लेल संघर्ष कऽर' परैत छैक।

हिरानन्द दरबाजा पर चौकीपर परले छलाह, केओ आबि गेलनि। ओ कहलनि हमरा गाम मे एकटा बुढ़ी दादी छथिन हुनका बेटा नजि छनि। चारि बिघा खेत छनि। ओ दु बिघा खेत चटिया सबकें पढ़ेक लेल विद्यालय बनेबाक लेल देथिन। ओ दुनू गोटे वापस आयल आ राति बिता भोरे बिदा भ' गेलाह। ओ सब रमाकान्त कें संग क' तखन बुढ़ी–दादीक ओतए गेलाह।

सोने लालक घरनी छः मास सँ बिमार छइ। सोने लाल अपन बहिन आ सुगियाक संगे ओकरा दरिभंगा डाक्टर ल' लऽ गेलै। सुगिया कें तीनटा बेटी पर सँ बेटा भेल रहै। तखने ओ असक्क परि गेल रहै। डाक्टर बनर्जी सेवा निवृति भ' अपन क्लीनिक बनौने छलै। दस दिन भर्ती भ' ठीक भ' वापस गाम घुरि आयल।

रमाकान्त दुनू परानी नोकर जुगेसर कें संग ल' तीनू गोटे बेटा लग मद्रास बिदा भेलाह। टीशन जा मद्रास वाला गाड़ी पर बैसलाह। गाड़ी पर अपन लोक नजि बुझाइत छल। जुगेसर मालिक क संग तम्बाकू चुनबैत तीन दिन आ दू रातिपर मद्रास पहुचि गेल। गाड़ी सँ उतरि बाहर आबि चारू कात अखियासलक केओ अपन लोक नहि भेटलै।

विहान भने दुनू बेटा–महेन्द्र आ रविन्द्र, दुनू पुतोहु डा० जमुना आ सुजाता सँ फैल सँ गप्प–सप्प भेलै। रमाकान्त बाबू बेटा–पुतोहु सँ कहलनि बौआ हम सदिखन दस लोकमे रहि छी। हमरा एतए नजि नीक लगैत अछि। तें हम जल्दिये चलि जायब। बेटा महेन्द्र कहलनि अहाँ सब पहिने चारि दिन आराम करू।

रमाकान्तकें मद्रास अयला आइ दसम दिन बित रहल छइ। एहि समयक अन्तराल मे मद्रासक प्रमुख जगह यथा–उदकमण्डल, कोडाइकनाल, एकहिहिलस्टेशन, शुचीन्द्रम, रामेश्वरम्, मदुराई, तिरुचिरापल्ली, नागोर, चिदम्बरम, काञ्चीपुरम आओर कन्याकुमारी सब घुमा क' देखा देलनि। मुदा ओतुका रीति–रेबाज अपना ओहिठाम सँ भिन्न अछि।

आजादीक बाद चौदह जनवरी उन्नैस सय उनहतरि ई० मे मद्रास राज्यक नाम तमिलनाडू राखल गेलै। केरल आ आन्ध्र प्रदेश दुनू राज्य सँ किछु भाग कें छाँटि एहि राज्यक निर्माण भेल छल। तमिलनाडू द्रविड़ सभ्यताक केन्द्र अदौकाल सँ रहल अछि। एहि राज्यक पूर्व मे बंगालक खाड़ी, दक्षिण मे हिन्दमहासागर, पश्चिम मे केरल आ उत्तर दिशा में कर्नाटक आ आन्ध्रप्रदेशक राज्य अछि।

एक दिन अढाई बजे राति मे एकटा गाड़ी दुर्घनाग्रस्त भ' गेलै। चारु डाक्टर कें जे रमाकान्तक दुनू बेटा आ पुतोहु रहथिन। दुर्घटना जगह पर अयबाक फोन अयलनि। ओहि गाड़ी मे एकें उद्योगपति परिवारक आठ टा सदस्य सबार रहै। दूटा क स्थलेपर मृत्यु भ' गेलै। बाकि सबकें अस्पताल में भर्ती करा उपचार शुरू भेलै।

महेन्द्र कें तीनटा आ अरविन्दकें दूटा बच्चा छलनि। मुदा एखन धरि ओ एकोटा पोता–पोतीकें पहचानैत नञि छल। बच्चाक संस्कार लेल परिवार जरूरी होइत छैक।

रमाकान्त बेटाकें कहल जे बौआ आब हम एकोदिन नहि रूकब। एहि ठाम सँ दरिभंगा सप्ताह मे एकें दिन गाड़ी जाइत अछि। हम आइये टिकट बना लैत छी। आब ओ सब गाम आबक तैयारी मे लागि गेल। साँझ मे दरिभंगाक लेल गाड़ी खुजतै। डा० सुजाता खाई पीबैएक इन्तजाम क' देलकै। आ ओ सब अपन गाम घुरि अयलाह।

जिनगीक जीत उपन्यासक रचयिता श्री जगदीश प्रसाद मंडल छथि। कल्याणपुर छोटे–सन गाम छलै। ओहि गामक अच्छे लालक घर वाली कें दूटा बच्चा जन्मे कालमे मरि गेल रहै। तेसर बच्चा नीक जकाँ जन्म लेलकै। बच्चाक सुन्दर–रंग–रूप देखि मोन आनन्द सँ भरि गेलै।

एहि उपन्यासक नायक 'बच्चे लाल' स्कूल में मास्टर रहै हुनकर माए सुमित्रा गाम–घरक व्यवहार कुशल स्त्री रहथिन। मखनी कें दिन–राति बदलि गेलै। सामा चकेबा लगिचा गेल रहै। सासु पुतोहु मिलि सामाक कनिया–पुतरा बनेलक।

बच्चे लालक पत्नी रूमा चाह ल' क' आबि गेलै। कि कनिये काल मे अच्छे लालक संग जुगाय जुमि गेलै। जुगायक घरबाली तीन बरख सँ असक्क छई। बच्चे लाल सँ पाइ ल' ओ घरनी कें इलाजक वास्ते डाकदर ल' लऽ गेलै। ओकरा डाकदर जाँचि क' दबाइ देलकें आ दवाइ खा ओ निकें भ' गेलै।

एखन तक बच्चे लाल साईकिल नजि किनने छल, संयोग सँ जुगाय आ अच्छे लाल आबि गेलै। ओ तीनू गोटे संग भ' बाजार जा साईकिल खरीदलक। पहिल बेर गाममे साईकिल बच्चे लाले खरीदलक।

नसीब लाल बेटाकें कहने रहै, जे मनुक्खकें दुःख सँ नञि घबरेबाक चाही। समय बलवान होइत छैक। लोककें मेहनत कऽर'क चाही। लोक सभ ढेकिये मे धान कुटैत छलै। उखैरि–समाठ सँ चूड़ा कुटैत छल। इनार मे पानि भरैत छल। करिन सँ खेत पटबैत छल। जाँत मे मडुआ पिसैत छल। परतान सँ मोथीक ओछानि बिनैत छल। सब काज लोक अपने क' लैत छल।

गामक धिया–पुता सब चटिया घर मे जाऽक' पढ़ब–लिखब शुरू क' देने छल। गामक शिबकुमार आ रामनाथ मैट्रिक फस्ट डिबीजन सँ पास केने छल। ओ दुनू गोटे मास्टरीक' ट्रेनिंगक स्कूल मे सरकारी मास्टर बनि गेल छल।

लोक सब देखलक जे पढ़ला–लिखला सँ नौकरी होइत छइ। देखा–देखी समुचा गामक धिया–पुता पढ़नाई शुरू क' देलक।

देबनकें एहि गाम मे अयला साढ़े एगारह बरख भ' गलै। ओ बुधनी कें कहलकै, दीदी आब हम अपन गाम जायब। से ओ बड़का भोरहरबे उठि बिदा भ' गेलै। आमक समय रहै, आ आमो पकब शुरू भ' गेल छलै। गाछीक' बगबार लग जा भरि पेट पकलाहा आमो खेलक। रस्ते मे एकटा मनलग्गू बटोहियो भेट गलै। ओ बाजल जे बौआजे संकट समस्या सँ लडैत अछि, संघर्ष करैत अछि जीवन मे सफलो वैह होइत छैक। से देवनो हारि नहि मानलक। से एकरे कहैत छइ– 'जिनगीक जीत'

एहि उपन्यासमे श्री जगदीश प्रसाद मंडल देहातक गाम–घरक विलक्षण चित्र देखौलनि अछि। मेहनतक बल पर लोक किछु कऽ सकैत अछि। एहि प्रकार सँ बुधनी, अच्छे लाल आ जुगाय सुखी जीवन बितौलक।

'भामती' उपन्यासक रचयिता उषाकिरण खान छथि। हिनक मैथिलीमे चारि टा उपन्यास उपलब्ध अछि– 'अनुतरित प्रश्न', 'हसीनामंजिल', 'दुर्वाक्षत', आ 'भामती' एकर प्रकाशन, 'मञ्च प्रकाशन', पटना सँ प्रथम संस्करणक संग, दिसम्बर 2007 ई० मे प्रकाशित भेल। मैथिली जगत मे ई अविस्मरणीय प्रेमकथाक रचयिताक रूपमे जानल जाइत अछि।

निष्कर्षतः कही सकैत छी जे समय बदलैत परिवर्तन होइत गेलै। जखन लोककें ई ज्ञान भ' जयतैक जे संसार एवं स्वर्ग सुख नाशवान छैक, तखन लोक ओहि सँ विरक्त भ' जयतैक। नित्य

शुद्ध, मुक्त एवं सत्य स्वभाव, ब्रह्मक ज्ञान मोक्षक कारण होइत अछि। ब्रह्म तँ सभक अभ्यन्तरमे 'आत्मा' रूप में विद्यमान रहैत अछि। जाहिसँ सृष्टिक उत्पति, स्थिति आ प्रलय होइत अछि। ओकरा ब्रह्म कहल जाइत अछि। न्याय, सांख्ययोग, मीमांसा आ वेदान्त पर एकटा पोथी लिखलनि वाचस्पति मिश्र एहि कारण सँ ओ 'षड्दर्शन'क रूप में प्रसिद्ध भेलाह।

संदर्भः

1. मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन– डॉ. अमरेश पाठक
2. मैथिली साहित्यक इतिहास– डॉ. दुर्गानाथ झा ''श्रीश'', भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा
3. मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन– डॉ. अमरेश पाठक
4. मैथिली उपन्यासक विकास– अशोक 'अविचल' (संपादक)
5. मैथिली उपन्यास आ उपन्यासकार– भूपेन्द्र कुमार चौधरी, प्रकाशन ग्रन्थालय, दरभंगा